गर्भोदकशायी विष्णु से जन्मे हैं। इस विधि से अन्त में जब वह आदिपुरुष भगवान् तक पहुँचता है तो अन्वेषण का अन्त होता है। सारे अन्वेषण का इतना ही प्रयोजन है कि तत्त्वज्ञ महानुभावों के सत्संग से यह जान लिया जाय कि इस वृक्ष के आदिकारण श्रीभगवान् हैं। ऐसा ज्ञानी पुरुष शनैः शनैः इस असत् प्रतिबिम्ब से अनासक्त होकर और विवेक के अभ्यास से दृढ़ हुए वैराग्य-शस्त्र द्वारा इससे अपने सम्बन्ध को काटकर वैकुण्ठ-जगत् रूपी यथार्थ वृक्ष में स्थित हो जाता है।

इस सन्दर्भ में **असंग** शब्द बहुत महत्त्वपूर्ण है। विषयभोग की आसक्ति और प्रकृति पर प्रभुत्व की इच्छा जीव में बड़ी प्रबल है। अतः शास्त्रों में वर्णित आत्मविद्या पर विचार-विमर्श करते हुए वैराग्य का अभ्यास और आत्मज्ञानी पुरुषों से श्रवण करना आवश्यक है। भक्त-गोष्ठी में इस प्रकार विचार-विमर्श करने से श्रीभगवान् के तत्त्व की प्राप्ति होती है। तब तत्काल उन्हीं के शरणागत हो जाना चाहिए। उस परम पद का यहाँ वर्णन है, जिसे प्राप्त पुरुष इस असत् प्रतिबिम्बित वृक्षरूप प्राकृत-जगत् में फिर नहीं आता। भगवान् श्रीकृष्ण आदिमूल हैं; उन्हीं से सब कुछ निकला है। उन श्रीभगवान् की कृपा-प्राप्ति के लिए केवल इतना आवश्यक है कि उनके शरणागत हो जाय। यह शरणागति श्रवण-कीर्तन आदि भक्तियोग के साधनों द्वारा होती है। वे इस प्राकृत-जगत् के विस्तार के स्रोत हैं। श्रीभगवान् ने स्वयं कहा हैः **अहं सर्वस्य प्रभवः**— ''मैं सबका आदिकारण हूँ।'' अतएव इस अति दृढ़ मूल वाले संसाररूप पीपल के पेड़ के बन्धन से मुक्ति के लिए श्रीकृष्ण के शरणागत अवश्य होना होगा। श्रीकृष्ण के शरणागत होते ही जीव तुरन्त इस संसार से अपने-आप वैराग्य को प्राप्त हो जाता है।

निर्मानमोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत्।।५।।

निर्मानमोहाः=मिथ्या अहंकार और मोह से मुक्त; **जितसंगदोषाः**=जो सगदोष को जीत चुके हैं; **अध्यात्मनित्याः**=नित्य अध्यात्म विचार करने वाले; **विनिवृत्तकामाः**=सब प्रकार की कामनाओं से छूटे हुए; **द्वन्द्वैः**=द्वंद्वों से; **विमुक्ताः**=छूटे हुए; **सुखदुःखसंज्ञैः**=सुख-दुःख नामक; **गच्छन्ति**=प्राप्त होते हैं; **अमूढाः**=ज्ञानी पुरुष; **पदम्**=परमपद को; **अव्ययम्**=शाश्वत; **तत्**=उस।

अनुवाद

जो मोह, मिथ्या अहंकार और असत् संग से मुक्त हैं, अध्यात्मतत्त्व को जानते हैं, जिनकी सम्पूर्ण प्राकृत कामनाएँ नष्ट हो चुकी हैं, जो सुख-दुःख के द्वन्द्वों से मुक्त हैं और श्रीभगवान् के शरणागत होना जानते हैं, वे ज्ञानीजन उस नित्यधाम को प्राप्त होते हैं।।५।।

तात्पर्य

इस श्लोक में शरणागति का बड़ा सुन्दर वर्णन है। इस पथ में सर्वप्रथम यह